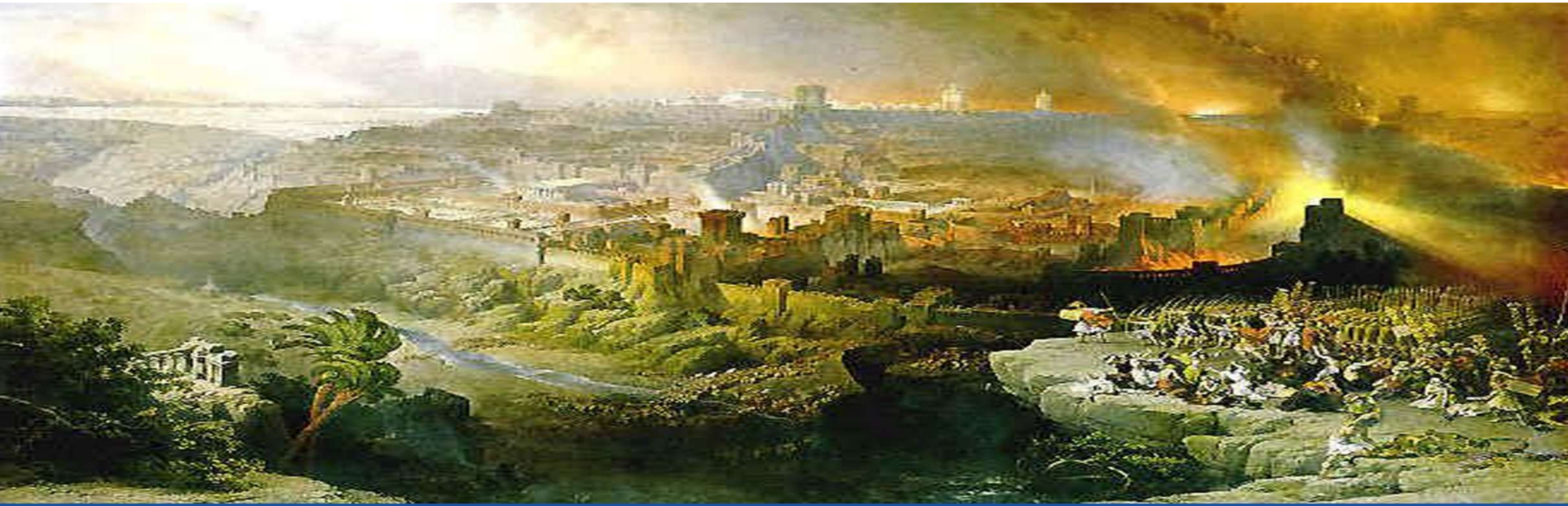

- हर पीढ़ी ने भविष्यवाणी को पूरा होते नहीं देखा
- यरूशलेम के पतन (७० ई.) से लेकर इस्राएल के पुनर्जन्म (१९४८) तक, एक भी भविष्यवाणी की घटना नहीं हुई
- कलीसिया ने इसे क्यों चूक लिया?

भविष्यद्वाणीय सुशुप्ति की १८ शताब्दियाँ

निर्वासित
७० ई.सन्

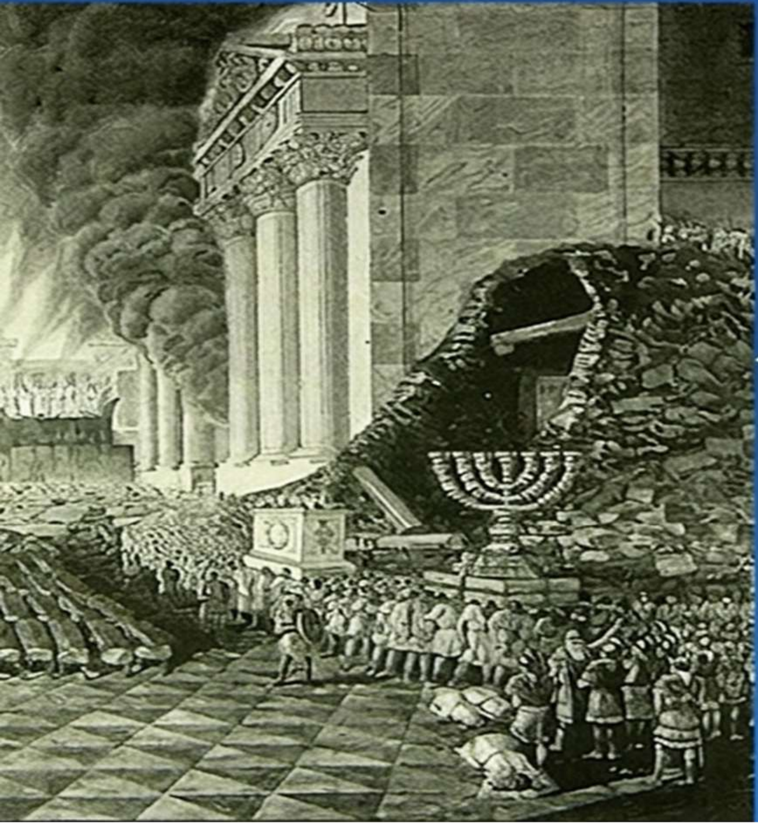

१९०० वर्ष

वापसी
१९४८

- १७वीं शताब्दी की कलीसिया ने “प्रतिस्थापन सिद्धांत” को अपनाया
- उसने निष्कर्ष निकाला कि इस्राएल वापस नहीं लौटेगा
- उसने भविष्यवाणियों को गलत समझा था
- इस्राएल कलीसिया का प्रतीक था
- नया इस्राएल यहूदी नहीं था…… वह अन्यजाति (गैर-यहूदी) था!
- अब्राहम को दी गई सभी प्रतिज्ञाएँ अन्यजाति कलीसिया को हस्तांतरित कर दी गईं
- मूसा की व्यवस्था के सभी श्राप यहूदियों पर डाल दिए गए

१९४८

इस्राएल वापस लौट आया!

- फिर १९६७ में यरूशलेम फिर से जीत लिया गया!
- फिर भी प्रतिस्थापन सिद्धांत आज भी कलीसिया का अंतर्निहित सिद्धांत बना हुआ है
- अब आँखों पर से पट्टी हटाने का समय आ गया है
- इस्राएल यहूदियों का है, जैसा अब्राहम को प्रतिज्ञा की गई थी

यहेजकेल ३६ और ३७

सूखी हड्डियों की घाटी

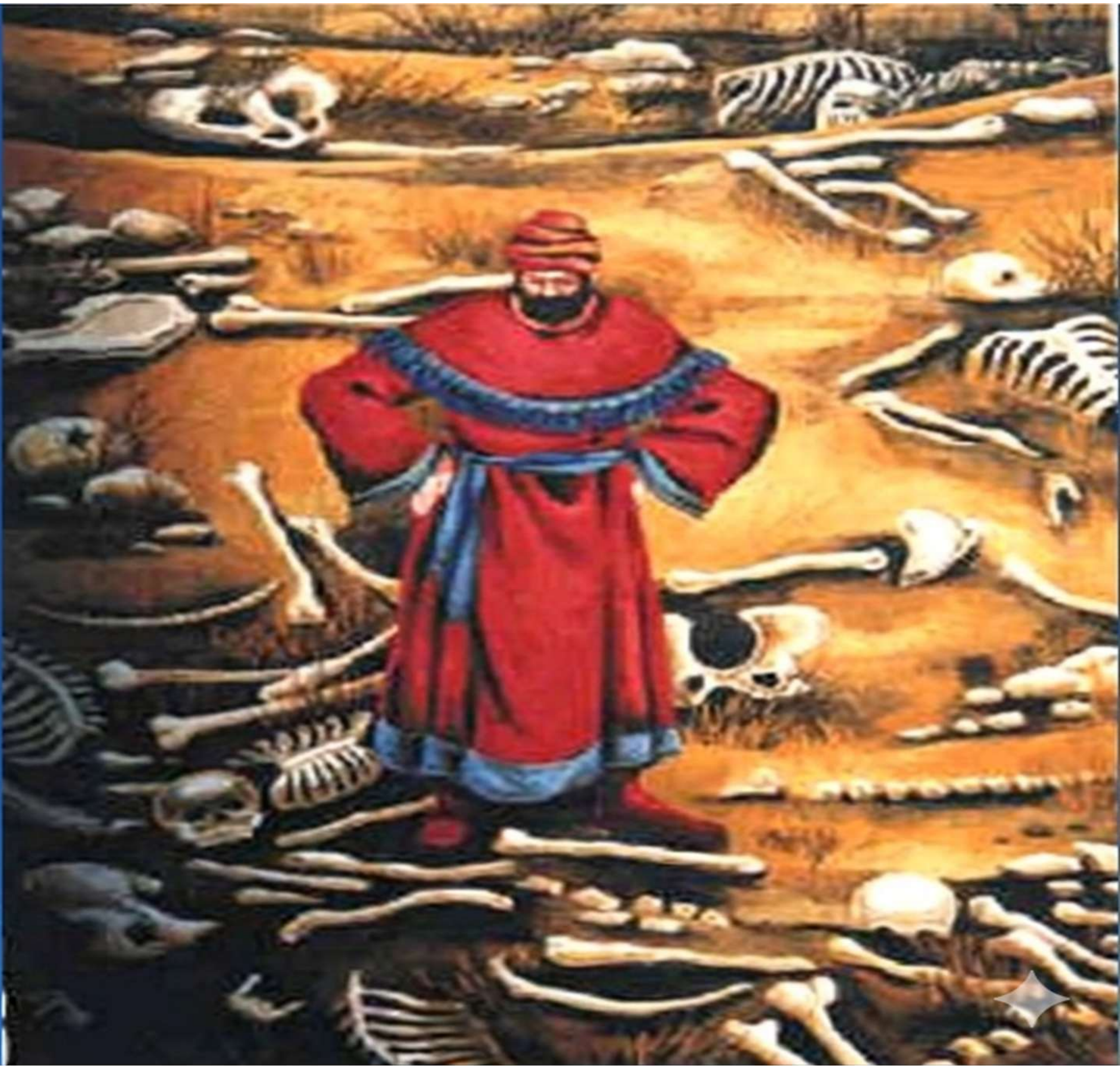

यहेजकेल ३६ और ३७
रोमी निर्वासन से वापसी

कालक्रम: राजा दाऊद से बाबुल तक

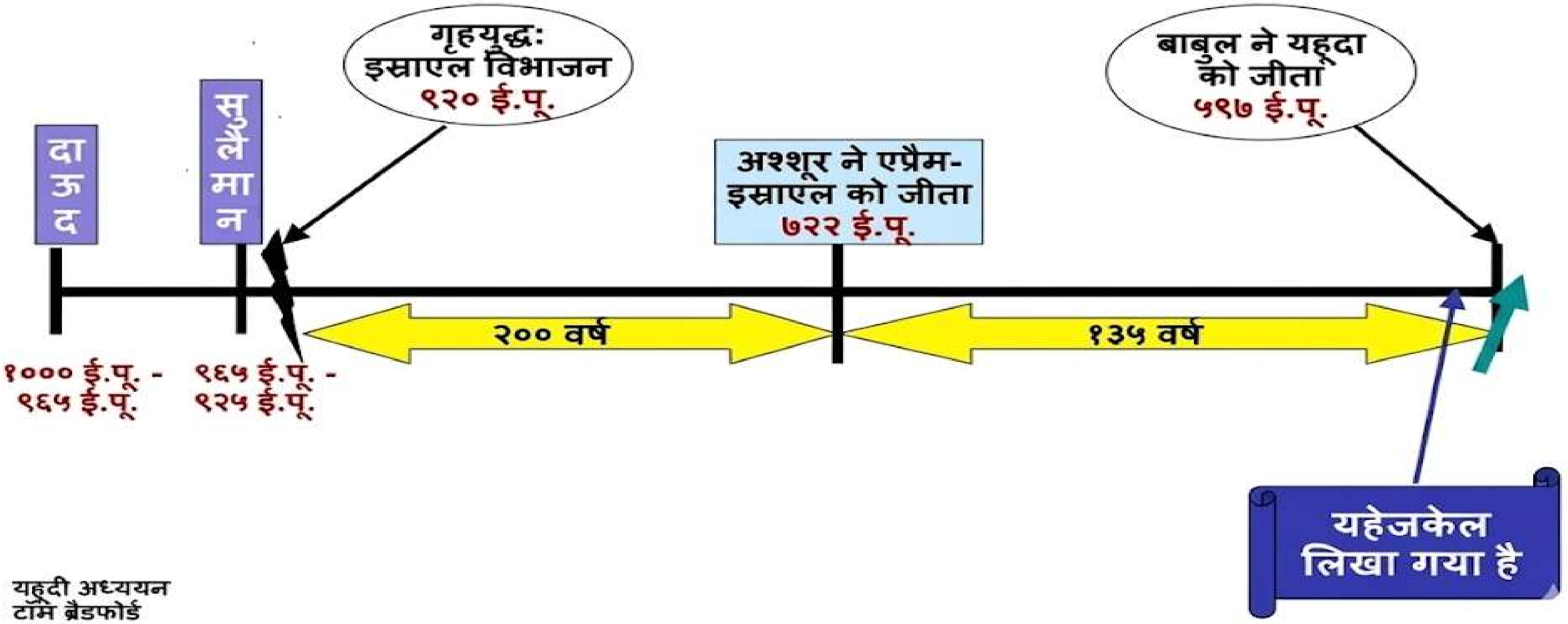

दाऊद

सुलैमान

गृहयुद्धः
इस्राएल विभाजन
९२० ई.पू.

अश्शूर ने एप्रैम-
इस्राएल को जीता
७२२ ई.पू.

बाबुल ने यहूदा
को जीता
५९७ ई.पू.

२०० वर्ष

१३५ वर्ष

१००० ई.पू. -
९६५ ई.पू.

९६५ ई.पू. -
९२५ ई.पू.

यहेजकेल
लिखा गया है

यहूदी अध्ययन
टॉम ब्रैडफोर्ड
८/१३/०३

इस्त्राएल के १२ गोत्र किस प्रकार संपूर्ण इस्त्राएल घराने को बनाते हैं

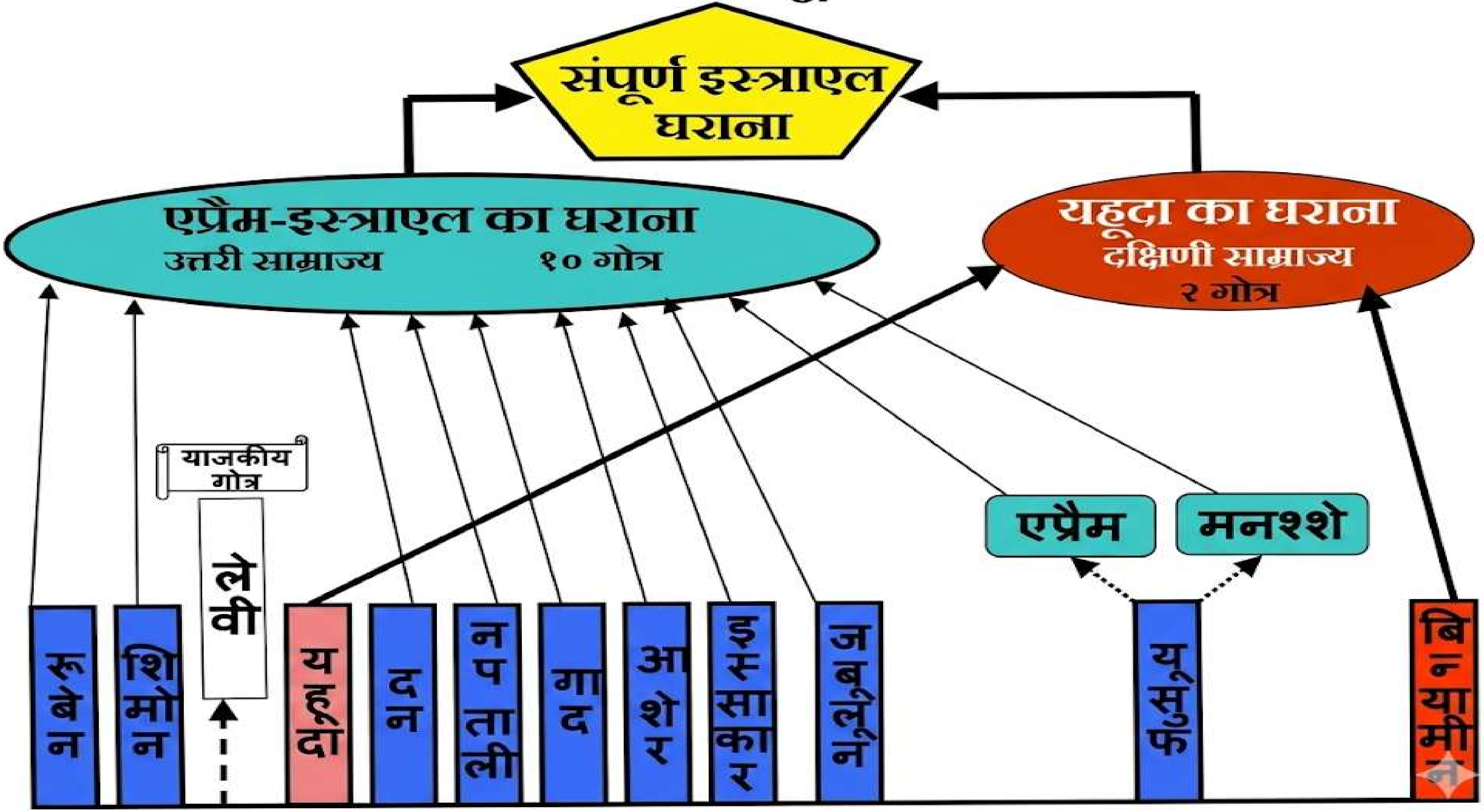

संपूर्ण इस्त्राएल घराना

एप्रैम-इस्त्राएल का घराना

उत्तरी साम्राज्य १० गोत्र

यहूदा का घराना

दक्षिणी साम्राज्य

२ गोत्र

याजकीय गोत्र

लेवी

एप्रैम

मनश्शे

रूबेन

शिमोन

यहूदा

दन

नपताली

गाद

आशेर

इस्साकार

जबूलून

यूसुफ

बिन्यामीन

दो लकड़ी की भविष्यद्वाणी

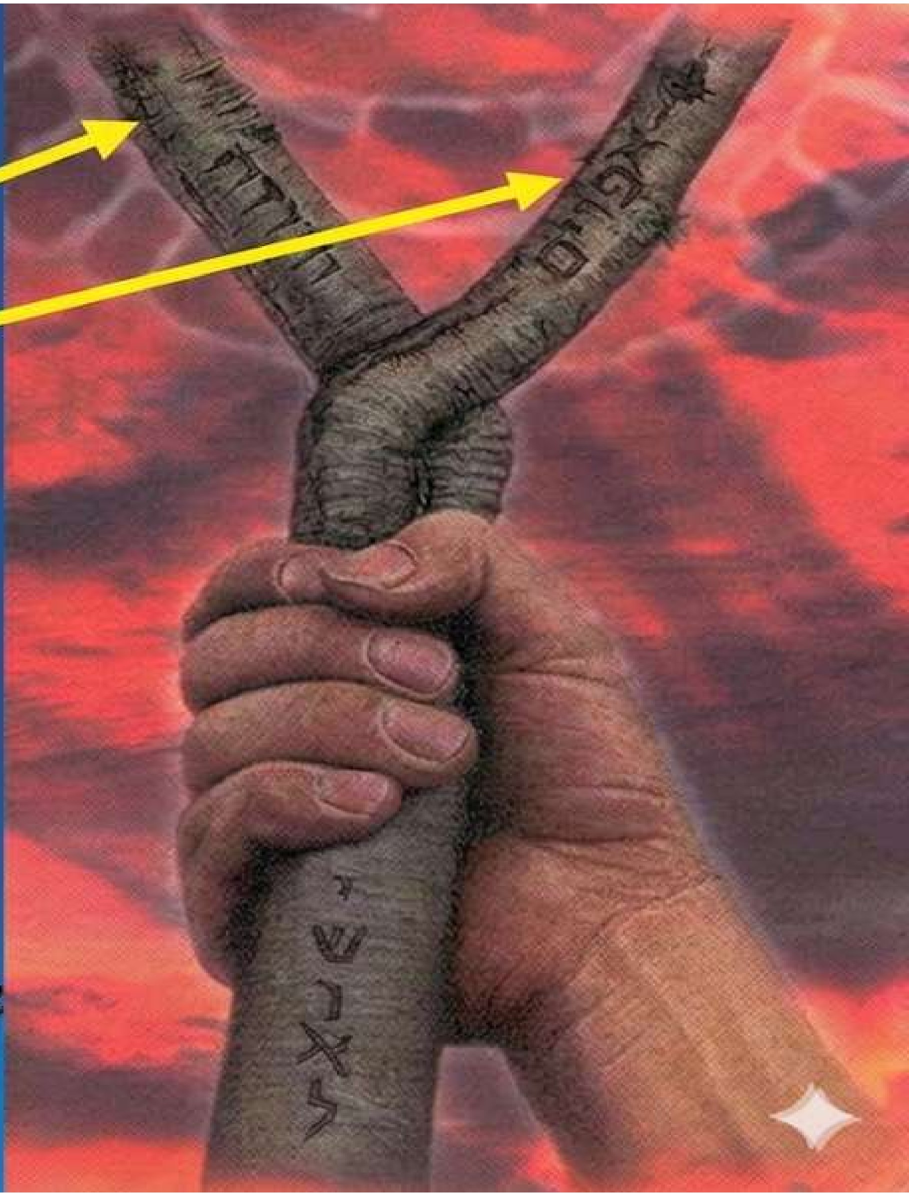

- – यहूदा के लिए १ लकड़ी
- – एप्रैम के लिए १ लकड़ी
- यहूदा वापस आ गया है
- मार्च २००५, इस्राएली सरकार ने उन इस्राएलियों की वापसी को मंज़ूरी दी... जो

  यहूदी नहीं हैं! बल्कि, वे एप्रैम (१० “खोए हुए” गोत्र) हैं।
- यहेजकेल ३६ और ३७ की...घटनाएँ हो रही हैं

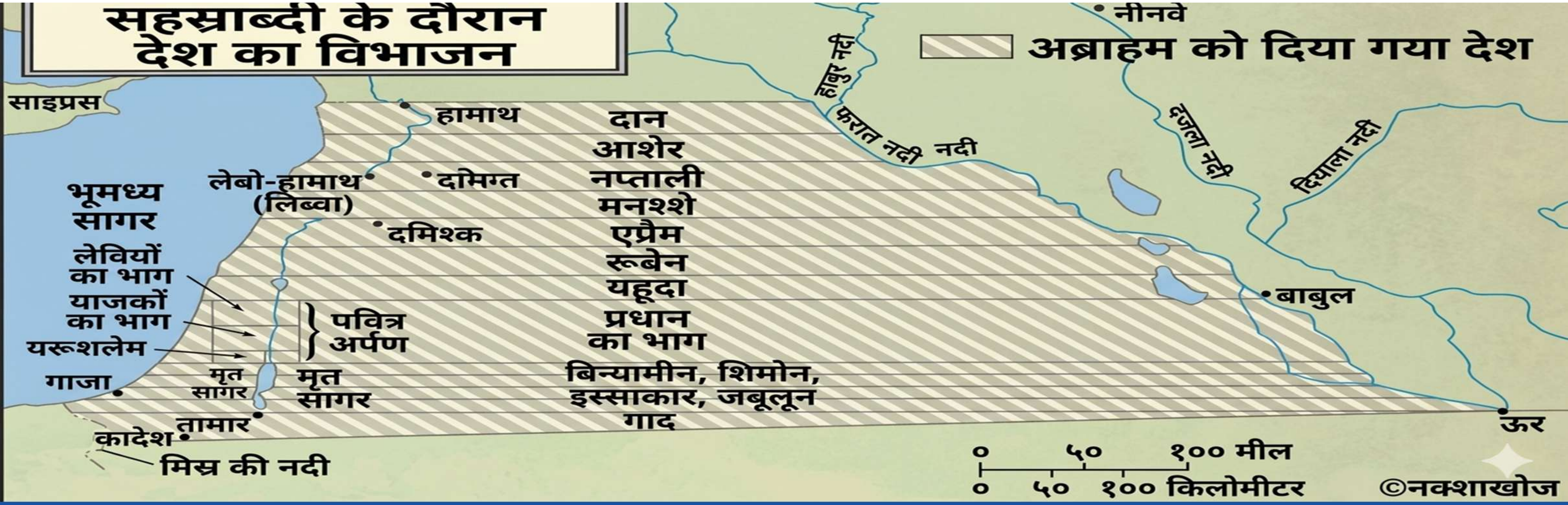
सहस्राब्दी के दौरान
देश का विभाजन
नीनवे
अब्राहम को दिया गया देश
हाबुर नदी
फरात नदी
नदी
दजला नदी
दियाला नदी
साइप्रस
हामाथ
दान
आशेर
नप्ताली
मनश्शे
एप्रैम
रूबेन
यहूदा
प्रधान
का भाग
बिन्यामीन, शिमोन,
इस्साकार, जबूलून
गाद
भूमध्य
सागर
लेबो-हामाथ
(लिब्वा)
दामिग्त
दमिश्क
लेवियों
का भाग
याजकों
का भाग
यरूशलेम
पवित्र
अर्पण
गाजा
मृत
सागर
मृत
सागर
तामार
कादेश
मिस्र की नदी
बाबुल
ऊर
० ५० १०० मील
० ५० १०० किलोमीटर
©नक्शाखोज

- **यहेजकेल अध्याय ३६ और ३७**
- अब्राहम जिस स्थान पर खड़ा था जब परमेश्वर ने उसे “वह भूमि” दी, वह आज पश्चिमी तट (वेस्ट बैंक) कहलाता है
- वह भूमि इस्राएल की है, न कि फिलिस्तीनियों की
- तुम कहाँ खड़े हो?

रामत-हासोर

- रामत का अर्थ है “ऊँचा स्थान”
- अब्राहम ३३०० फीट ऊँची चोटी पर खड़ा था
- परमेश्वर ने उसे बिना किसी शर्त के वह भूमि दे दी
- वाचा अभी भी प्रभावी है!
- पद १७: भूमि की लम्बाई और चौड़ाई में चल
- इसे चज़ाकाह कहा जाता है

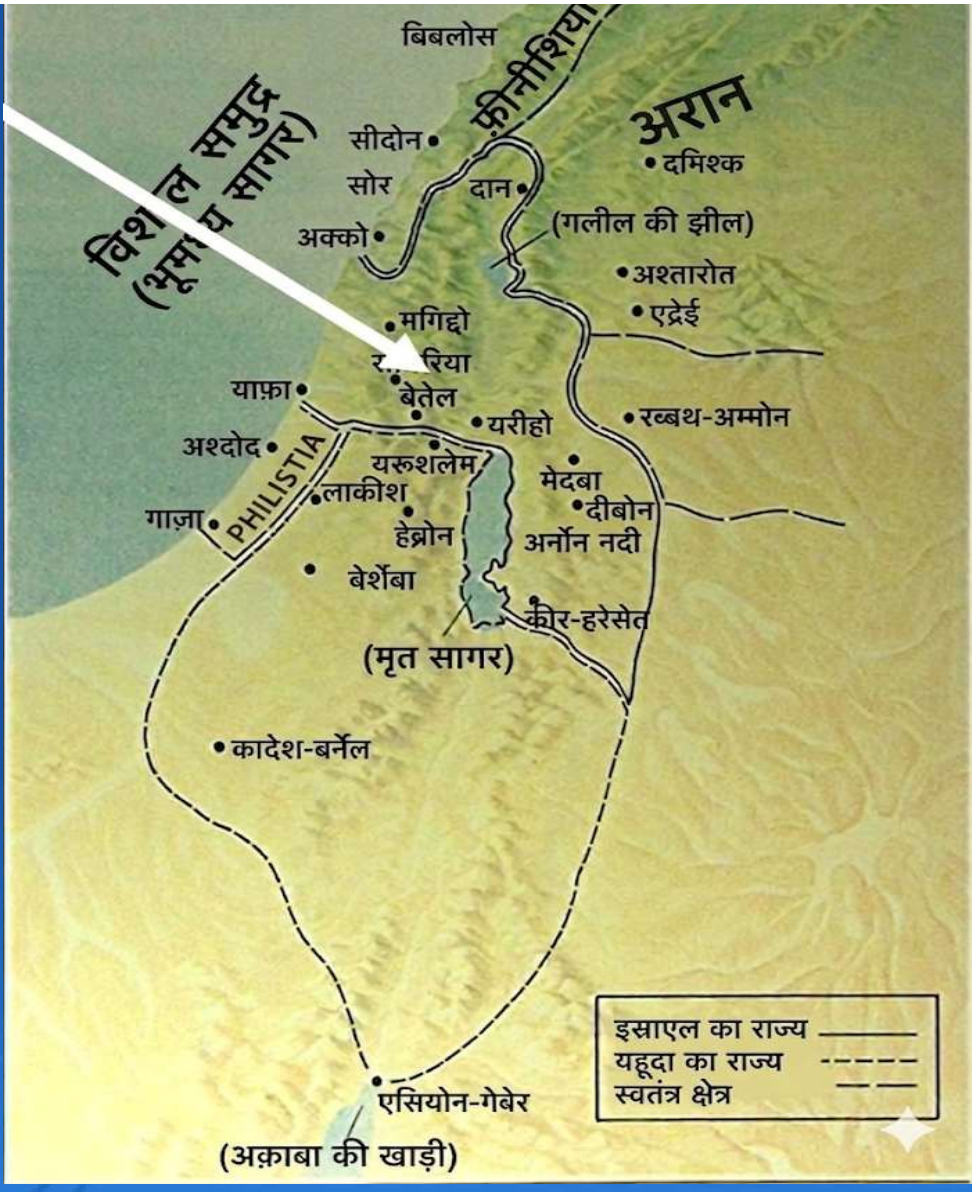
बिबलोस
फ़ीनीशिया
अरान
विश ल समुद्र
(भूम य सागर)
सीदोन
सोर
दान
अक्को
दमिश्क
(गलील की झील)
अश्तारोत
एद्रेई
मगिद्दो
रिया
याफ़ा
बेतेल
यरीहो
रब्बथ-अम्मोन
अश्दोद
PHILISTIA
यरूशलेम
मेदबा
लाकीश
दीबोन
गाज़ा
हेब्रोन
अर्नोन नदी
बेर्शेबा
कीर-हरेसेत
(मृत सागर)
कादेश-बर्नेल
एसियोन-गेबेर
(अक़ाबा की खाड़ी)
इस्राएल का राज्य
यहूदा का राज्य
स्वतंत्र क्षेत्र

अब्राहम भूमि पर चलता है

- चज़ाकाह उस युग की एक व्यापक कानूनी प्रथा थी
- नई संपत्ति का स्वामी भूमि की परिधि में चलकर “अपने अधिकार क्षेत्र को चिह्नित करने” का प्रतीकात्मक कार्य करता था
- कुछ संस्कृतियों में यह कार्य समय-समय पर दोहराया जाता था ताकि अधिकार की पुनः स्थापना हो सके
- इस कार्य को किए बिना न तो अब्राहम और न ही अन्य लोग इस भूमि के हस्तांतरण को कानूनी रूप से मान्य समझते